आज का पुरुषार्थ 14 July 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" अपने सत्य स्वरुप में स्थित होना है तो, आज से सदा के लिए रोना प्रूफ बन जाये और परमात्मा को अपना साथी बना ले, क्योंकि वही एक और एकमात्र सत्य है "*

बाबा ने हम सभी को **सत्यता की शक्ति** दी है। पहली सत्यता की शक्ति .. सत्य ज्ञान। दुसरा .. **आत्मा की सत्य शक्ति की पहचान।** तीसरा .. **परमात्मा के सत्य स्वरुप** का उनके सत्य धाम का, उनके शक्तियों की पहचान।

यह तीनों ही सत्यता की शक्ति हमारे पास होनी चाहिए। सत्यता में बहुत बल है। याद करें भगवानुवाच ...

" जिधर सत्य है उधर मैं हूँ .. और जिधर मैं हूँ .. उधर ही विजय है "

तो हम अपनी सत्यता की शक्ति को बढ़ाते चले। हमारी सत्यता है ही प्युरीटी। इस **प्युरीटी के बल** को बढ़ाने से हम सत्यता के बल का सुन्दर अनुभव करेंगे।

कई लोगों में एक कमजोरी रहती है। **कहते है** ... " *मैं सच्चाई पर चलने वाली हूँ .. कोई अगर सच्चाई के विरूद्ध कुछ करते है तो मैं हर्ट हो जाती हूँ .. मुझे सच्चाई बहुत प्रिय है .. कोई मेरे सामने असत्य बोलते है .. तो मुझे बहुत क्रोध आ जाता है*"

लेकिन यदि आप **सत्य प्रेमी** है तो आपके पास सत्यता का बल होना चाहिए। केवल सत्य **बोलना** और सत्य **सुनना**, यह पर्याप्त नहीं है। और कलियुग में इसकी सम्पूर्ण आशायें भी नहीं रखनी चाहिए।

अगर सत्यता के कारण आपकी स्थिति बिगड़ती है, आप रोते है तो यह सत्यता तो आपकी कमजोरी हो गई। आप सत्य नहीं है। **आप सत्य स्वरूप में स्थित नहीं है।** आपके पास सत्यता का बल नहीं है।

यदि कोई आपके बारें में निगेटिव वायब्रेशन्स फैलाता है, उल्टी सुल्टा बातें करता है, और आप सत्य है। परन्तु आप परेशान हो जाते है ...

" मेरा वातावरण बिगार दिया .. लोग मुझे क्या कहेंगे? "

... और आप अपनी स्थिति को पूरी तरह नष्ट कर लेते है।

तो यह भी आपकी सत्यता नहीं है। सत्यता की शक्ति माना अचल अडोल। और आपको यह विश्वास और धैर्य रखना होगा कि ... " ***जिधर सत्य है .. उधर बाबा है .. उधर विजय है***"

चाहें हजार लोग असत्य बातें करें मेरे बारें में, परन्तु मेरे साथ स्वयं भगवान है। विजय मेरी ही होगी। यदि आपको यह **विश्वास** नहीं है तो आप बाबा की सत्यता को नहीं पहचानते।

दुसरा असत्य बोलता है और आपकी स्थिति बिगड़ती है, आपको क्रोध आता है। यह भी आपमें न सत्यता की **शक्ति** है और न ही **दिव्यता** है। न सत्यता की तेज आपके पास है।

क्योंकि आपके क्रोध आपके तेज को छिन्न-भिन्न कर देता है। इसलिए अपने स्थिति को अचल अडोल बनाना। दुसरा असत्य बोल रहा है, जानते है आप।

मुस्कुरा दे ... यही आपकी सत्यता की शक्ति है। अपनी इस शक्ति से उसे ऐसे वायब्रेशन्स दे कि ... वह अपने असत्य को realise करें, असत्य बोल न सके। ... यही आपकी सत्यता की शक्ति है।

तो आइये हम अपनी इस शक्ति को बढ़ाये। जितना जितना हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होते जायेंगे, हमारी यह शक्ति बढ़ती जायेगी।

और जितना जितना हम **प्युरीटी की शक्ति को बढ़ायेंगे**, बाबा में अपना विश्वास को बढ़ायेंगे, बाबा को पहचानेंगे, उतनी हमारी यह शक्ति बढ़ती जायेगी।

यही सत्यता की शक्ति संसार से असत्यता के अंधकार को समाप्त करेंगी। इसलिए अपने इस स्वरुप में स्थित हो जाये। आपका सत्य आपको नाजुक न बनाये। आपका सत्य आपको रुलाये नहीं। आपका सत्य आपको अचल अडोल बनाये। यही आपकी शक्ति है।

तो आज सारा दिन हम अपने इष्ट देव इष्ट देवी स्वरुप में रहेंगे। याद करेंगे

" मैं वही हूँ जिनकी मंदिरों में पूजा हो रही है .. मैं तो पूर्वज हूँ .. इष्ट देव देवी हूँ "

अपना स्वरुप इमर्ज करें ....

" मैं विघ्नविनाशक गणेश हूँ .. सबके विघ्न नष्ट करने वाला हूँ "

या फिर ....

" मैं अष्टभुजा धारी देवी हूँ .. असुर संहारीनी हूँ .. सबकी मनोकामनायें पूर्ण करने वाली हूँ "

आज सारा दिन यह अभ्यास करेंगे ....

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org